INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

मुण्डारी गीतों में श्रृंगार रस

जयमुनी बड़ाएउद
सहायक प्राध्यापक
मुण्डारी विभाग
राँची विमेंस कॉलेज, राँची।
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

मुण्डा जनजाति भारत की एक प्रमुख जनजाति है। भारतीय आदिवासी समुदाय में मुण्डा जनजाति का विशेष स्थान है। ''मुण्डा जनजाति दक्षिण पूर्व एशिया में केंद्रित ऑस्ट्रालॉयड प्रजाति परिवार की एक विशिष्ट जाति है।''[1] यह मुख्य रूप से झारखण्ड राज्य में निवास करती है। इसके अलावा ओड़िसा, असम, बिहार, छतीसगढ़ और अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह में भी निवास करती है। झारखण्ड को पहले छोटानागपुर के नाम से जाना जाता था। छोटानागपुर एक पठारी इलाका था और यहाँ मुण्डाओं का राज्य हुआ करता था। इसकी जानकारी मुण्डारी लोकगीतों के माध्यम से प्राप्त होती है। मुण्डारी लोकगीतों में छोटानागपुर को सोना और रूपा के समान बतलाया गया है। छोटानागपुर से संबंधित लोकगीत उद्धृत है–

''सोना लेकन दिसुम लिपि
ओकोरेम् लेलद लिपि
रूपा लेकन् गमएअ कारे
चिमए रेम् चिनद्।
सोना लेकन् दिसुम लिपि
डोंएसा रेम् लेलद लिपि
रूपा लेकन् गमएअ कारे
कुकुरा रेम् चिनद् कारे।''[2]

इस गीत में लिपि और कारे नाम की चिड़िया से पूछा जा रहा है कि हे लिपि, सोने के समान देश को तुमने कहाँ देखा है ? हे कारे, रूपे के समान देश को तुमने कहाँ देखा है ?

हे लिपि, सोने के समान देश को तुमने डोंएसा में देखा है। हे कारे, रूपे के समान देश को तुमने कुकरा में देखा है। इससे पता चलता है कि डोंएसा और कुकरा मुण्डाओं का निवास स्थान था।

मुण्डाओं ने सर्वप्रथम छोटानागपुर में ही निवास किया था और उन्होंने इस क्षेत्र को खनिज संपदा से भरपूर पाने के कारण सोना तथा रूपा के सामान बतलाया।

''सोना लेकन दिसुम तबु

रूपा लेकन गामाए तबु

नागापुरे हो मुण्डा

तोवा हुरूम सुकु रसि

जोरो लिंगि तान।''[3]

इस गीत में गीतकार कहते हैं कि हमारा देश सोना के समान है और धरती रूपा के समान है। हे मुण्डा, नागपुर में दूध और मधु का रस टपक रहा है, बह रहा है। यह गीत प्रकृति में मिठास और मधुरता को दर्शाता है।

छोटानागपुर की पृष्ठभूमि में मुण्डाओं के आगमन के संबंध में श्री शरतचंद्र राय का कहना है कि ''वे उतर पश्चिम भारत से बुंदेलखण्ड, आजमगढ़ तथा रोहतासगढ़ होते हुए छोटानागपुर में आये।''[4] यही कारण है कि मुण्डा जनजाति को छोटानागपुर पठार के सबसे प्राचीन निवासियों में से एक माना जाता है। यह क्षेत्र जंगल, पहाड़ियों और नदियों से घिरा हुआ है। यहाँ की मनोरम छटाओं के बीच मुण्डा जनजाति की सांस्कृतिक और सामाजिक व्यवस्था विकसित हुई थी। मुण्डाओं की सांस्कृतिक व्यवस्था एक प्राकृतिक, आादिवासी और सामुदायिक जीवन प्रणाली है। मुण्डा जनजाति के लोग प्रकृति के पूजक होते हैं। वे पेड़, पहाड़ तथा जल की पूजा करते हैं।

प्रकृति से ही जुड़ा मुण्डा जनजाति का मुख्य पर्व 'बा' है, जिसे सरहुल कहते हैं। यह पर्व वसंत ऋतु मार्च – अप्रैल में मनाया जाता है। यह प्रकृति और मानव के संबंध को दर्शाता है। मुण्डाओं का अधिकांश पर्व कृषि और प्रकृति से ही जुड़ा है। जैसे – करमा, सोहराई, मागे, फागु, जोमनावा, और कोलोमसिंह आदि। मुण्डाओं की सांस्कृतिक व्यवस्था काफी पारम्पारिक है। साल भर में मनाए जाने वाले पर्व–त्योहारों को बड़े ही उत्साह के साथ मनाया जाता है। इनके पर्व–त्योहारों में नृत्य और संगीत के बिना त्योहार की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

नृत्य और संगीत प्रेमी होने के कारण ही कहा गया है – ''सेन गे सुसुन, कजि गे दुरङ, डुरि गे दुमङ''[5] अर्थात चलना ही नृत्य, बोलना ही संगीत और नितम्ब ही मांदर हैं। मुण्डा अपने

गीतों को किसी शिक्षण संस्थानों में नहीं सीखते हैं। वे नृत्य के अखाड़ों में ही मस्त वातावरण में नये–नये गीतों को सीखते हैं। प्रायः मुण्डा गांवों में किसी भी पर्व को एक साथ नहीं मनाया जाता है। सभी गांव अपने अनुसार पर्व मनाने के लिए स्वतंत्र है। गांव के पाहन और ग्रामवासियों की सहमति से पाहन द्वारा एक निश्चित दिन का अह्वान किया जाता है। उसी दिन किसी पर्व या त्योहार को मनाया जाता है। ऐसे समय में यदि किसी गांव में सामुहिक नृत्य हो रही है तो दूसरे गांव के युवक भी उस नृत्य में शामिल होते हैं। यहीं, किसी के द्वारा यदि कोई नया गीत गाया जाता है तो दूसरे युवक और युवतियाँ उसे सीखते हैं। वहाँ से अलग होने पर गीत के कुछ अंश को भूल भी जाते हैं परन्तु यदि मुण्डा युवक और युवतियाँ मुण्डा गीतों की प्रकृति को समझ जायेंगे तो वे उन टुटी हुई कड़ियों को फिर से जोड़ लेते हैं। एक तो यह जाति ही कवितामय है। प्रत्येक व्यक्ति भावुक और स्वर पूर्ण है, दूसरे उनकी काव्यकला इतनी सरल और सुपरिचित है, जिसके संस्कार प्रत्येक व्यक्ति पर पड़े हुए हैं। प्रत्येक परिस्थिति को गीतों के माध्यम से व्यक्त करना इनकी विशेषता है।

यहाँ एक गीत प्रस्तुत है, जिसमें एक प्रेमी अपने प्रेमिका के गाँव नाच–गान का आनंद लेने के लिए आने की इच्छा जाहिर कर रहे हैं। मुण्डाओं के गाँव में सभी एक साथ बड़े ही हर्षोल्लास के साथ नाचते–गाते हैं। जहाँ प्रेमिका भी मुग्ध होकर नाचती है। इससे संबंधित प्रस्तुत है–

''आपे हातु अकाड़ा
जोजो सुबा जुम्बाड़ा
नेते हिजुः गे, हिजुःगे सानाइङ
जनाओ जनाओ।।

डुलकी दुमङ सड़ि तानरे
रूतु बनम रूमुलतानरे
जानाओ– जानाओ
नेते हिजुः गे, हिजुःगे सनाञ्
जानाओ– जनाओ।।''[6]

इस गीत के माध्यम से प्रेमी अपने प्रेमिका के पास आने के लिए व्याकुल है। वह कहता है–तुम्हारे गांव के अखाड़ा का इमली की छाया के पास मुझे हर रोज आने का मन करता है। ढोल मांदर के बजने पर, बाँसुरी–बानाम के गुँजने पर मुझे हर रोज आने का मन करता है।

रस –

रस काव्य की आत्मा है। ''वाक्यं रसात्मकम् काव्यं।''[7] अर्थात् रसात्मक वाक्य को काव्य कहते हैं। 'रस' का सामान्य अर्थ है – 'आनंद'। जिस रचना को पढ़कर आनंद प्राप्त हो, वह काव्य है।

रस की निष्पति के विषय में नाट्यशास्त्र नामक प्रसिद्ध ग्रंथ के रचयिता भरत–मुनि ने कहा है– विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्ररस–निष्पतिः। अर्थात् विभाव, अनुभाव और व्याभिचारी भाव के संयोग से रस की निष्पति होती है।

काव्य को पढ़ते समय, सुनते या देखते समय पाठक, श्रोता व दर्शक को जिस आनन्द की अनुभूति प्राप्त होती है उसे 'रस' कहते हैं। रस के बिना काव्य नहीं हो सकता। काव्य की हर पंक्ति में 'रस' अवश्य होता है और उसी के अनुसार व्यक्ति के चित में भाव उत्पन्न होता है।

रस मुख्य रूप से 9 प्रकार के होते हैं– 1. श्रृंगार रस, 2. हास्य रस, 3. करूण रस, 4. रौद्र रस, 5. वीर रस, 6. भयानक रस, 7. वीभत्स रस, 8. अद्भुत रस, 9. शांत रस

श्रृंगार रस –

''काम के अंकुरित होने को श्रृंग कहते हैं। इसी से प्रेम भाव से युक्त रस श्रृंगार कहलाता है।''[8] सभी रसों में से 'श्रृंगार रस' को रसराज कहा गया है। श्रृंगार रस को रसराज कहने का कारण यही है कि यह सबसे व्यापक, मानवीय भावनाओं के सबसे करीब और आनंददायी भाव होता है। श्रृंगार रस का मुख्य रूप प्रेम और आकर्षण होता है जो प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में स्वाभाविक रूप से मौजूद होता है। साथ ही मिलन–विरह जैसे भाव पाए जाते हैं जो मन को गहराई से छूते है। श्रृंगार रस प्रेम, आनंद और सौंदर्य का सबसे प्रभावशाली रूप है, जो अन्य रसों को भी प्रभावित करता है। श्रृंगार रस का स्थायी भाव 'रति' है। ''रति या काम न केवल मनुष्य जाति में अपितु सभी जातियों में मुख्य प्रवृति के रूप में पाया जाता है और सबको उसके प्रति आकर्षण होता है, इसलिए सबसे पहिले श्रृंगार को स्थान दिया गया है।''[9]

मुण्डारी गीतों में भी श्रृंगार रस युक्त गीत पाए जाते हैं जिनकी संख्या बहुत अधिक है। इन गीतों में कभी प्रेमी–प्रेमिका के मिलने की इच्छा तो कभी एक दूसरे से दूर होने का गम आसानी देखा जा सकता है। प्रेमी–प्रेमिका के मन के मिलन से संबंधित काव्य दृष्टव्य है–

''बान्दु नाड़ि हादोः रेओ

मेड़ेद सनब सिदोः रेओ

जी बयर तोनोल दो

कागे सुगाड़ा राड़ाओ

जी बयर तोनोल दो

कागे सुगाड़ा राड़ाओ।''[10]

इस गीत में प्रेमी का प्रेमिका के प्रति अटूट प्रेम को दर्शाया गया है। जीवन के किसी भी परिस्थिति में प्रेमी और प्रेमिका का प्रेम कभी टूटता नहीं है। इस गीत में प्रेमी अपने प्रेमिका को कहते हैं– बान्दु लता के कट जाने पर, लोहे का सिकड़ टूट जाने पर, हमारे मन का बंधन, हे प्रिय, कभी नहीं टूटेगा। हमारे मन का बन्धन, हे प्रिय, कभी नहीं टूटेगा।

''हातु दिसुम आतूः रेदो

ओते सिरमा डुबाओः रेओ

कुड़ाम दिरि ओनोल दो

कागे सुगाड़ा मेटाओ

कुड़ाम दिरि ओनोल दो

कागे सुगाड़ा मेटाओः।''[11]

गाँव देश बह जाने पर, धरती आसमान डूब जाने पर, हमारे मन का बन्धन, हे प्रिय कभी नहीं टूटेगा। हमारे मन का बन्धन, हे प्रिय, कभी नहीं टूटेगा।

''सिंगि राटिः गितिः रेओ

चाण्डुः राटिः दुडुम रेओ

उडुः सेंगेल जुनुल दो

कागे सुगाड़ा होकाओ

उडुः सेंगेल जुनुल दो

कागे सुगाड़ा होकाओः।''[12]

सूरज के सो जाने पर, चाँद को नींद आने पर, मन के आग की ज्वाला, हे प्रिय, कभी नहीं बुझता। मन के आग की ज्वाला, हे प्रिय कभी नहीं बुझता।

श्रृंगार रस के दो भेद होते हैं –

1. संयोग श्रृंगार

2. वियोग श्रृंगार

1. **संयोग श्रृंगार** –

जब नायक और नायिका का मिलन (संयोग) होता है और उससे उत्पन्न प्रेम, आनन्द और हर्ष का वर्णन किया जाता है, तो उसे संयोग रस कहते हैं।

संयोग रस में प्रेमी–प्रेमिका एक साथ होते हैं और उनके मिलन से खुशी, प्रेम और मधुर भाव प्रकट होते हैं। संयोग श्रृंगार में प्रेमपूर्वक मिलन और वार्तालाप आदि का वर्णन होता है। मुण्डारी भाषा के गीतों मे संयोग श्रृंगार के अनेक काव्य विद्यमान हैं–

''लांदा जागार लिंगितानरे

सुकु रासि जोरोतानरे

जानाओ–जानाओ।

नेते हिजुःगे, हिजुः गे सानाञ्

जानाओ–जानाओ।।''[13]

प्रेमी, प्रेमिका के लिए व्याकुल हो रहे हैं। प्रेमिका के साथ हँसना, बातें करना उनके मन को काफी प्रसन्न करता है। प्रेमी कहता है, हास्य बातों के छलछलाने पर, सुख का रस झर–झराने पर मुझे हर रोज यहाँ आने का मन करता है। मुझे हर रोज आने का जी करता है।

''मुगुद–मुगुद लान्दातन लोः

जापगार उपुदुर तानलोः

दुबकेन किन जोजो सुबारे

सुगाड़ा आबेन चि ताइकेन

सुगाड़ा आबेनचि, आबेनचि ताइकेन।''[14]

प्रेमी, प्रेमिका के साथ मंद–मंद हँसते हुए बातें करते हैं। इस समय को मन में संजोकर रखते हैं। प्रेमी उसे स्मरण करते हुए कहता है, मंद–मंद हँसी के साथ बातें करने वाली, धक्के देने वाली, इमली की छाँव में बैठने वाली प्रिय, क्या तुम ही थी। प्रिय, क्या तुम ही थी।

''मिसा तेलङ हारालेना

मिसा तेलङ दाड़िलेना

बारांगि माइ आञा जी दो

आमाः रेगेआ।''[15]

इस गीत में प्रेमी और प्रेमिका एक साथ बड़े हुए हैं और अब प्रेमी अपने प्रेमिका को कहते हैं कि हम दोनों एक साथ बड़े हुए हैं, एक साथ ही हम दोनों ने दुनिया को देखा है। बारांगि, मेरा मन तुममें ही है, तुम्हारे लिए ही है। प्रेमी अपना आंतरिक प्रेम भावना को प्रेमिका के सामने प्रकट करते हैं।

''प्रेम–पिरिति जाला

हरिति – पिरिति ताला

दुलु मुलुञ जी दो

आलाए–बालाए रे

इलि बुल जाना चि रेञ

रानु बुल जाना।''[16]

प्रेमी का मन प्रेमिका के लिए आकुलता है। वह कहता है प्रेम और प्रीत की ज्वाला में, हृदय में प्रेम के बीच मेरा मन व्याकुल हो रहा है। क्या, मैं हँड़िया के नशे में हूँ या प्रेम रूपी औषधि ने मुझे अपने वश में कर लिया है।

''रेएद–रानु को रिदे लेका,

सेर मेड़ेद को मिदे लेका,

रिदे किञाम, मिदे किञाम।

लेआगेञ लेआजान।

आमरे ने जी जामागे जामाजान।

आमरे ने जी जामागे जामाजन।''[17]

प्रेमी–प्रेमिका के संयोग के समय प्रेमी अपने प्रेमिका को कहते हैं कि जड़ी – बूटी पीसने की तरह और गर्म लोहा गलाने की तरह ही तुमने मुझे पीस डाला, मिला डाला। मैं मिल ही गया हूँ। तुममें यह मन मिल ही गया है। तुममें यह मन मिल ही गया है।

''लिजाः किचिरि को नेदे लेका,

लुम हासा का जोदे लेका,

नेदे किञाम, जोदे किञाम।

रांगागेञ, रांगाजान।

आमरे ने जी जामागे, जामाजन।

आमरे ने जी, जामा गे जामाजन।''[18]

प्रेमी अपने प्रेमिका को बड़े ही प्यार से कहते हैं कि कपड़ा रंगने की तरह, मिट्टी लीपने की तरह तुमने मुझे लीप दिया है, पोत दिया है। तुम्हारे रंग में रंग ही गया। तुममें यह मन मिल ही गया है। तुममें यह मन मिल ही गया है।

प्रेमी और प्रेमिका का साथ में हँसना, बातें करना, समय बिताना ही संयोग रस है। संयोग रस का मुख्य भाव आनंद और प्रेम होता है।

वियोग श्रृंगार –

जब नायक और नायिका के बीच दूरी या अलगाव के कारण उत्पन्न दुःख, विरह और पीड़ा का वर्णन किया जाता है, तो उसे वियोग श्रृंगार कहते हैं। यहाँ प्रेमी प्रेमिका एक दूसरे से दूर होते हैं और उनके मन में याद और उदासी की भावना उत्पन्न होती है। वे एक दूसरे के याद कर भाव विभोर हो जाते हैं। मुण्डारी गीतों में वियोग श्रृंगार के अनेक काव्य विद्यमान हैं। इन गीतों कभी नायक तो कभी नायिका अपनी जुदाई की वेदना को उद्वेलित करते हैं–

''मोलोङ रे टिका सिंदुरी

ने ससङ साड़ी।

कुमु रेओ कुड़ाम पुकार।

मेद्दाः झारे झार।

रगे रेओ बनोः उबार

मेद्दाः झारे झार।''[19]

प्रेमी, प्रेमिका का किसी दूसरे के साथ विवाह होने पर अपनी मन की पीड़ा बतलाते हैं। वे कहते हैं कि माथे पर सिंदूर और यह पीली साड़ी, सपने में भी छाती करे पुकार। आँखों से आँसू झरने की तरह झरा–झर बह रहे हैं, रोने पर भी उबर नहीं पा रहे हैं। आँखों से आँसू झरने की तरह झरा–झर बह रहे हैं।

''कोआ होलाङ कजिकेन

कोआ होलङ कुमुकेन।

साना रेओ बानोः जागार।

मेद्दाः झारे झार।

रगे रेओ बनोः उबार

मेद्दाः झारे झार।'' [20]

प्रेमी अपने प्रेमिका की याद में कहते हैं– जब हम साथ थे, तब हम क्या कहते थे और हम क्या सपना देखते थे। परंतु अब चाहने पर भी बात करना संभव नहीं है। इसी याद में आँखों से आँसू झरने की तरह झरा–झर बह रहे हैं। रोने पर भी उबर नहीं पा रहे हैं। आँखों से आँसू झरने की तरह झरा–झर बह रहे हैं।

''दुड़ा तेलङ दाबेजन

चांगा–चांगाए काटा उसार।

मेद्दाः झारे झार।

रगे रेओ बनोः उबार

मेद्दाः झारे झार।''[21]

प्रेमी की याद में व्याकुल प्रेमिका कहती है– हम धूल से दब गए हैं और धूँए में कहीं अटक गए हैं। हमारे चलते कदम भी पीछे लौट रहे हैं। आँखों से आँसू झरने की तरह झरा–झर बह रहे हैं। रोने पर भी उबर नहीं पा रहे हैं। आँखों से आँसू झरने की तरह झरा–झर बह रहे हैं।

''नुतुमेताञ् रिड़िङकेमे

मुदामेताञ् गिड़िकेमे

लाया कोया जीताञ् उडार।

मेद्दाः झारे झार।

रगे रेओ बनोः उबार

मेद्दाः झारे झार।'' [22]

प्रेमिका अपने प्रियतम को दुखी मन से कहती है कि आप मुझे भूलने की कोशिश कीजिए, मेरा नाम भूल जाइए। मेरे नाम की अँगुठी को हमेशा के लिए विसर्जित कर दीजिए। मेरा मन व्यथित हो रहा है। आँखों से आँसू झरने की तरह झरा–झर बह रहे हैं। रोने पर भी उबर नहीं पा रहे हैं। आँखों से आँसू झरने की तरह झरा–झर बह रहे हैं।

''माराङहादा पीटिपीड़ि

दांड़ा केदाञ सेंदाउरि

आहो, इदो कोतिआ ?

होरा–होरा आएः गेञ् तांगि – तांगिआ।

आहो, इदो कोतिआ ? ''[23]

प्रेमी अपने प्रेमिका के दूर चले जाने पर दुखित होकर उसे खोजने का प्रयास करते हैं। उनकी यादों में दूसरों से कहते हैं कि मैं माराङहादा बाजार टाँड़ तक खोज आया। हे साथी, वह कहाँ चली गई? रास्ते–रास्ते मैं उसी को ढूँढता हूँ। हे साथी वह कहाँ चली गई?

''बोंगा चिको बोंगा किःआ

सुकानबुरू उकुकिःआ।

आहो, इदो कोतिआ?

बाइओः रेचा नुतुमेतेञ् रागिआ।

आहो, इदो कोतिआ?''[24]

प्रेमी की व्यथा इतनी बढ़ती है और वे सोचते हैं–क्या किसी ने उसकी बलि चढ़ा दी या सुकान पहाड़ ने उसे छिपा लिया है ? वे लोगों से पूछते हैं–हे साथी, वह कहाँ चली गई है ? संभव होता तो मैं नाम लेकर उसे पुकारता, हे साथी, वह कहाँ चली गई है ?

मुण्डारी गीतों में राधा और श्री कृष्ण के प्रेमलीला को काफी सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया गया है। राधा और श्री कृष्ण के प्रेम को श्रृंगार रस का सर्वोतम उदाहरण माना जाता है। जिस तरह मुण्डारी गीतों में राधा और श्री कृष्ण प्रेमलीला को काफी सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया गया है उसी तरह उनके वियोग संबंधी गीत भी उद्धृत हैं–

''आम नातिन आञदो

गातिञ मेददाः जोरो ताना हो

गातिञ आमदो गातिञ

कारेम हिआतिञ दो।

जी ताञ दो हिआतिङते

दिदि लेका जालातिङ ताना

गातिञ ने सोमाए रे

ने हिआतिङ दो।

इसु दिनाते काञ जोमान

निदा सिंगि जी जुल ताना

गातिङ आमदो गातिङ

कारेम साएआद जाःञ दो।'' [25]

राधा श्रीकृष्ण की यादों में रोती है। वह कहती है कि हे प्रिय, तुम्हारे लिए मेरे आँसू बरस रहे हैं। हे प्रिय, तुम्हें तो मेरी चिंता ही नहीं है। श्रीकृष्ण को पाने के लिए कहती है– मेरा दिल दुःख से भर गया है। गिद्ध की तरह उड़ता फिरता रहता है। हे प्रिय, तुम्हें तो मेरी चिंता ही नहीं है। राधा, अपने प्रियतम की यादों में सब कुछ छोड़ देती है। वह कहती है कि मैंने बहुत दिनों से खाना छोड़ दिया है। मेरा मन रात और दिन जलता रहता है। हे प्रिय, तुम्हें तो मेरी खबर ही नहीं है।

निष्कर्ष –

मुण्डा जनजाति भारत की एक प्रमुख जनजाति है। भारतीय आदिवासी समुदाय में मुण्डा जनजाति का विशेष स्थान है। मुण्डा जनजाति के लोग प्रकृति के पूजक होते हैं। वे पेड़, पहाड़ तथा जल की पूजा करते हैं। मुण्डाओं की सांस्कृतिक व्यवस्था काफी पारम्पारिक है। इनके पर्व–त्योहारों में नृत्य और संगीत के बिना त्योहार की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। मुण्डा गाँवों में प्रायः लोग सामुहिक रूप से नाचते हैं। सामुहिक नृत्य का आनंद मन को भावभिवोर कर देता है। आनंद शब्द का मुण्डारी अर्थ होता है–रासिका। अर्थात् आनंद या खुशी।

रस वह आनंद या भाव है जो काव्य या नाटक आदि को पढ़ने या देखने से हमारे मन मे उत्पन्न होता है। मुण्डारी गीतों में भी श्रृंगार रस युक्त गीत पाए जाते हैं जिनकी संख्या बहुत अधिक है। इन गीतों में कभी प्रेमी–प्रेमिका के मिलने की इच्छा तो कभी एक दूसरे से दूर होने का गम आसानी देखा जा सकता है। संयोग श्रंगार के गीतों में प्रेमी और प्रेमिका का प्रेम भावना प्रस्फुटित होता है। मुण्डारी गीतकारों ने भी संयोग श्रृंगार युक्त गीतों की रचना की है। जो जनमानस में पाए जाते हैं। वियोग श्रृंगार से संबंधित गीतों में प्रेमी–प्रेमिका का विरह वेदना प्रस्तुत की जाती है, जो मुण्डारी गीतों में बहुलता से पाई जाती है।

संदर्भ ग्रंथ –

1. सोमा सिंह मुण्डा–'मुण्डा'

2. श्रीजगदीश त्रिगुणायत–बाँसरी बज रही–पृ. सं.–86

3. काण्डे मुण्डा–ससं बा–पृ. सं.–96

4. सोमा सिंह मुण्डा–'मुण्डा'

5. डॉ. गिरिधारी राम गौंझू 'गिरिराज'– झारखण्ड का लोकसंगीत–पृ. सं.–10

6. डॉ. रामदयाल मुण्डा–सेलेद–पृ. सं.–21

7. विश्वम्भर 'मानव'–रस छंद अलंकार–पृ. सं.–11

8. विश्वम्भर 'मानव'–रस छंद अलंकार–पृ. सं.–14

9. आचार्य विश्वेश्वर–काव्य प्रकाश–पृ. सं.–115

10. डॉ. रामदयाल मुण्डा–सेलेद–पृ. सं.–10

11. डॉ. रामदयाल मुण्डा–सेलेद–पृ. सं.–10

12. डॉ. रामदयाल मुण्डा–सेलेद–पृ. सं.–10

13. डॉ. रामदयाल मुण्डा–सेलेद–पृ. सं.–19

14. डॉ. रामदयाल मुण्डा–सेलेद–पृ. सं.–17

15. डॉ. रामदयाल मुण्डा–आनायुम दुरङ पृ. सं.– 312

16. काण्डे मुण्डा–ससं बा–पृ. सं.–103

17. डॉ. रामदयाल मुण्डा–सेलेद–पृ. सं.–67

18. डॉ. रामदयाल मुण्डा–सेलेद–पृ. सं.–67

19. डॉ. रामदयाल मुण्डा–सेलेद– पृ. सं.–111

20. डॉ. रामदयाल मुण्डा–सेलेद– पृ. सं.–111

21. डॉ. रामदयाल मुण्डा–सेलेद– पृ. सं.–111

22. डॉ. रामदयाल मुण्डा–सेलेद– पृ. सं.–111

23. डॉ. रामदयाल मुण्डा–सेलेद– पृ. सं.–131

24. डॉ. रामदयाल मुण्डा–सेलेद– पृ. सं.–131

25. डॉ. रामदयाल मुण्डा–श्री बुदू बाबू और उनकी रचनाएं पृ. सं.–28

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA

Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM